पाठ 2. सच्चे मित्र

पाठ का परिचय

प्राचीन काल में यूनान के सिसिली नगर में डामन और पीथियस नाम के दो मित्र रहते थे। उनकी मित्रता बहुत गहरी थी। एक बार दोनों मित्र घूमते-घूमते पड़ोसी नगर सिरेकस जा पहुँचे। वहाँ का राजा बहुत दुष्ट और अत्याचारी था। पीथियस ने राजा के बारे में कुछ शब्द कहे। राजा ने क्रोधित होकर निर्दोष पीथियस को कैद कर लिया और उसे मृत्युदंड सुना दिया। इससे पहले कि पीथियस को मृत्युदंड दिया जाता, वह अपने परिवारवालों को इसकी सूचना देना चाहता था। इसके लिए उसने राजा से विनती की। पीथियस के लौटकर न आने की स्थिति में उसकी जगह पर डामन को मृत्युदंड देने की शर्त पर राजा ने उसे जाने दिया। फ़ाँसी का दिन आ गया। पीथियस अभी तक लौटकर नहीं आया था। डामन अपने मित्र के लिए फ़ाँसी पर लटकने को तैयार था। सभी की निगाहें उस सच्चे मित्र पर टिकी थीं, जो अपने मित्र को बचाने के लिए स्वयं फ़ाँसी पर लटकने को तैयार था। वह राजा से आग्रह कर रहा था कि पीथियस को आज़ाद कर दिया जाए और उसकी जगह पर उसे जल्दी से फ़ाँसी पर लटका दिया जाए। दोनों मित्रों की अटूट मित्रता तथा एक-दूसरे पर अटल विश्वास देखकर राजा भौंचक्का रह गया। उसने दोनों मित्रों को आज़ाद कर दिया और उन्हें अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

सच्ची मित्रता ईश्वर का वरदान होती है। जिसे ऐसी मित्रता मिल जाए वह सौभाग्यशाली होता है। अगर मित्रता करें तो ऐसी ही मित्रता करनी चाहिए जैसी डामन और पीथियस ने की।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से उनके मित्रों के बारे में बातें करें। मित्रता पर उनके विचार जानें। पीथियस और डामन की मित्रता पर उनके विचार जानें। उनके जीवन से जुड़ी ऐसी घटना उनसे सुनें जिसमें उनकी मित्रता की झलक मिलती हो।